भय से बाधित होता है सीखना

किशन लाल सालवी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की कल्पना में एक अच्छा विद्यालय वह है जहाँ हर बच्चे के लिए सम्मान, सुरक्षा, सहानुभूति, ख़ुशी और सीखने के लिए प्रेरित करने वाला वातावरण हो। लेकिन "बच्चे दण्ड और भय से ही अच्छा पढ़ते हैं" की आम धारणा के कारण सही मायने में सीखना बाधित होता है। यह लेख पिटाई और डर से बच्चे के व्यक्तित्व व सीखने पर पढ़ने वाले दुष्प्रभावों की पड़ताल करता है, और बेहतर सीखने व इसके लिए अच्छे विद्यालय की कल्पना को आकार देने के अनुभव-आधारित तरीक़े सुझाता है।

भय के बारे में समाज का नज़रिया

मैं राजसमन्द, राजस्थान के एक छोटे-से गाँव के सरकारी प्राइमरी विद्यालय में शिक्षक हूँ। यहाँ तक़रीबन 15-16 वर्षों से पढ़ा रहा हूँ। गाँव के लोग कृषि पर निर्भर होने की वजह से बहुत समृद्ध नहीं हैं। जब मैंने विद्यालय में पढ़ाना शुरू किया, देखा कि ज़्यादातर अभिभावक कहते थे कि पढ़ने के लिए बच्चों को यदि मारना भी पड़े तो इस बात से उन्हें कोई दिक़्क़त नहीं है।

समाज की यह आम समझ है कि बच्चों को अगर सिखाना है तो उन्हें मारना ही पड़ेगा। शिक्षकों और अभिभावकों में यह आम धारणा है कि बच्चों से सम्बन्धित किसी भी समस्या का एक ही उपचार है, और वह है 'पिटाई'। वे यह भी मानते हैं कि पिटाई के भय से बच्चा कोई ग़लत काम नहीं करेगा और बेहतर इन्सान बन जाएगा। इसका एक अन्य पहलू भी है कि कोई शिक्षक बच्चों से बहुत प्यार करता है, इसीलिए उनकी इतनी पिटाई करता है कि कहीं वे बिगड़ न जाएँ। पर यह सभी धारणाएँ, सच्चाई से कोसों दूर हैं।

चित्र 1: ख़ुश रहना, रुचि लेना सीखने के शुरुआती और महत्त्वपूर्ण पहलू हैं

चित्र 2 : साझेदारी से सीखने का सुख

भय से गुमसुम रहते हैं बच्चे

शुरू में, जब मैं विद्यालय आया, मैंने देखा कि बच्चों में बहुत झिझक थी। वे किसी भी विषय को समझने के लिए या नई चीज़ें सीखने के लिए शिक्षक के पास जाने में हिचकिचाते थे। उनको पढ़ाते समय मैंने पाया कि वे पढ़ाया हुआ समझ नहीं रहे थे। पाठ पढ़ाते समय उनकी तरफ़ से कोई सवाल नहीं आते थे। अगर मैं उनसे कोई सवाल पूछता तब भी उनका कोई जवाब नहीं आता था। ज़्यादातर समय वे मेरी कक्षा में गुमसुम से बैठे रहते थे। बच्चों में नए पाठ को लेकर कोई उत्सुकता नहीं होती थी। ऐसा लगता था कि वे शारीरिक रूप से तो कक्षा में हैं, लेकिन मानसिक रूप से नहीं। बच्चों के साथ कक्षा में कोई गतिविधि करने की कोशिश करता, उसमें उनकी सहभागिता बहुत कम रहती। उन्हें ज़बरदस्ती ही गतिविधियों में शामिल करवाया जाता।

डर सीखने को रोकता है

बच्चों को अगर सिखाना है तब वास्तव में हमें उन्हें पिटाई से दूर ही रखना पड़ेगा। पिटाई के सहारे उनसे बोलकर काम तो करवाया जा सकता है, लेकिन कुछ भी सिखाया नहीं जा सकता, लर्निंग नहीं होगी। हमेशा बच्चे को पीटते रहने से, या पिटाई का डर बनाए रखने से उसका ध्यान हर समय उस तरफ़ रहेगा कि कहीं मेरी पिटाई न हो जाए। बच्चे को हमेशा यह डर लगा रहता है कि कहीं उससे कोई ग़लती न हो जाए। बच्चे ग़लती के डर से सीखने पर ध्यान ही नहीं दे पाते हैं। वे शिक्षक पर ज़रूर ध्यान देते हैं कि कब उनका हाथ उठेगा और हमारी पिटाई हो जाएगी। जो बच्चे भय में रहते हैं, वे सीख नहीं पाते हैं।

हमें इस बात को समझना पड़ेगा कि बच्चे विद्यालय में अपनी पहचान और स्वाभिमान लेकर आते हैं। वे ऐसी पारिवारिक पृष्ठभूमि से आते हैं जहाँ बच्चों को मारना जायज़ माना जाता है, जो कि सही नहीं है। ऐसी परिस्थिति में, वह घर से भी मार खाकर आए, और विद्यालय आकर भी मार खाए, यह मुनासिब नहीं। इससे उनके स्वाभिमान को ठेस पहुँचती है। ऐसा ज़्यादा दिनों तक नहीं चल पाता, और बच्चे विद्यालय से पलायन कर जाते हैं।

कहानी मुकेश की

कक्षा 5 में मुकेश नाम का बच्चा पढ़ता था। वह शुरू में बहुत झगड़ालू प्रवृत्ति का था। साथी बच्चों के साथ बात-बात पर झगड़ा करता। पढ़ाई में भी उसका ध्यान नहीं रहता। वह प्रतिरोध करता था जिस कारण उसके साथ काम करने में काफ़ी दिक़्क़त होती थी। फिर हमने उसके साथ बात की। पता चला कि उसका परिवार उस पर बहुत नियंत्रण करता है। वह अपने घर में बोली जाने वाली ग़लत शब्दावली का इस्तेमाल विद्यालय में करता। फिर हमने उससे अलग-अलग चीज़ों पर चर्चा करनी शुरू की। उसे उसकी अपनी भाषा में समझाना शुरू किया। उसे विभिन्न तरह की गतिविधियों में शामिल और प्रोत्साहित किया। उसके लिए ऐसी गतिविधियों का चयन किया जिन्हें वह कर पाए। जैसे, उसे यह समझा दिया कि संज्ञा क्या होती है, और फिर पाठ्यपुस्तक के एक पाठ में से उसे संज्ञा शब्दों को छाँटने के लिए कहा। जब उसने यह काम पूरा किया, उसका आत्मविश्वास देखते ही बना।

सुबह की सभा में उसे बोलने, अपनी बात रखने के लिए प्रोत्साहित किया। गत वर्ष, जब मई में समर कैम्प लगा था तब यह बच्चा किसी भी गतिविधि में सहभागिता नहीं कर रहा था। लेकिन बाद में धीरे-धीरे गतिविधियों में उसकी भागीदारी बढ़ने लगी। अब वह बच्चा पढ़ने-लिखने की अच्छी स्थिति पर है। सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि मुकेश अब कक्षा में अधिक समय व्यतीत करने लगा है क्योंकि उसे कक्षा में स्वीकार्यता मिली है। उसका ख़ुद पर विश्वास बना रहे, इसके लिए हम उसे समय-समय पर उसका पोर्टफ़ोलियो दिखाते रहते हैं ताकि वह ख़ुद की प्रगति देख सके।

मुकेश जब कक्षा 4 में पढ़ता था तब उसे हिन्दी पढ़ने में तो दिक़्क़त थी ही, पर अँग्रेज़ी की किताब पढ़ने में ज़्यादा दिक़्क़त थी। लेकिन वह अब दोनों विषय अच्छे से पढ़ रहा है।

कक्षा प्रक्रिया को कैसे भयमुक्त बनाया ?

1. डण्डे या डर के किसी भी माध्यम को कक्षा से दूर रखा

मैंने महसूस किया है कि डर जैसी चीज़ हमारे विद्यालय के बच्चों के साथ नहीं होनी चाहिए। अगर हम बच्चों को मानवीय और शिक्षासम्मत तरीक़े से सिखाना चाहते हैं, हमें सज़ा के लिए काम में आने वाली डण्डे जैसी चीज़ें कक्षा से हटानी होंगी। हमारा उद्देश्य है कि बच्चे ख़ुशी-ख़ुशी व निडर होकर दौड़ते हुए विद्यालय आएँ। उन्हें विद्यालय में मज़ा आए, तभी लगेगा कि यह विद्यालय है। अन्यथा विद्यालय उनको सज़ा लगता है। इसके लिए हमने भय और सज़ा के माहौल को मिटाने के लिए भरसक कोशिशें कीं।

> **“कक्षा में सभी बच्चों को सवाल करने की आज़ादी है। बच्चे पाठ से सम्बन्धित और अन्य सभी तरह के सवाल कर सकते हैं।”**

चित्र 3 : अर्थपूर्ण बातचीत से सीखते हैं बच्चे

2. बच्चों की भाषा का उपयोग और प्रोत्साहन

अगर हम बच्चों का भय दूर कर लेंगे तब वे बिना हिचक अपनी बात कह पाएँगे। इसके लिए मैंने शिक्षण के दौरान अपना व्यवहार बदला। मैं उनसे आराम से बात करता, उससे भी ज़रूरी, उनकी बात को ध्यान से सुनता, उनके साथ दोस्ताना व्यवहार रखता। बच्चों की हिचकिचाहट दूर करने के लिए उनकी भाषा में बात करने लगा, उनके अनुकूल होने लगा, और उनकी छोटी-छोटी उपलब्धियों को प्रोत्साहित करने लगा। ऐसा करने से बच्चे धीरे-धीरे मेरे नज़दीक आने लगे हैं।

3. स्वतंत्र अभिव्यक्ति के मौक़े देना

शिक्षण के दौरान पाया कि भय की अनुपस्थिति में बच्चे में आत्मविश्वास आता है, और आत्मसम्मान भी बढ़ता है। हमने बच्चों के संकोच को दूर करने के लिए बहुत सारी गतिविधियों की रूपरेखा बनाई, सुबह की सभा में बच्चों का भाग लेना अनिवार्य किया। छोटे-से-छोटा बच्चा भी प्रार्थना सभा में सामने आएगा और बिना डरे, बिना हिचके अपनी बात पूरे आत्मविश्वास के साथ रखेगा। फिर चाहे वह कहानी हो, कविता हो या किसी अन्य तरह की प्रस्तुति। इसका प्रभाव यह हुआ कि अब ज़्यादातर बच्चे बेझिझक सुबह की सभा में अपनी बात रखते हैं।

कई बार प्रार्थना सभा में बच्चे व्यक्तिगत बातें भी साझा करते हैं। इसे हम बढ़ावा भी देते हैं। हमारा मानना है कि जब बच्चे अपनी व्यक्तिगत बातें रख रहे होते हैं, वे विद्यालय के साथ अपना एक अन्तरंग रिश्ता भी बना रहे होते हैं। इसलिए जब बच्चे अपने निजी अनुभव रखते हैं, उन्हें रोका नहीं जाता।

4. गतिविधि–आधारित शिक्षण

कक्षा में अधिकतर शिक्षण गतिविधि-आधारित होता है। इसकी वजह से बच्चों को ज़्यादा नियंत्रित करने की ज़रूरत नहीं पड़ती। ऐसी बहुत सारी गतिविधियाँ बनाई गई हैं जिनमें ज़्यादा-से-ज़्यादा बच्चे भाग ले सकें। उदाहरण के लिए, एक 'शब्द खेल' बनाया है जिसमें बच्चे ख़ुद जाकर डिब्बे से शब्द कार्ड उठाते हैं। अगर बच्चा उस शब्द को सही तरीक़े से पढ़ लेता है, वह एक क़दम आगे बढ़ जाता है। इस तरह ये शब्द कार्ड सारे बच्चों के पास घूमते हैं। जो बच्चा जितने ज़्यादा शब्द पढ़ पाता है, वह उतना ही आगे बढ़ जाता है। ये गतिविधियाँ बच्चों को रुचिकर भी लगती हैं, और सीखने से उनका जुड़ाव भी बनाती हैं। इससे कक्षा में अव्यवस्था की स्थिति नहीं बनती है। इसी प्रकार कक्षा शुरू होने से पहले की गतिविधियाँ भी बच्चों को व्यवस्थित बनाती हैं। जैसे– कौन-सा समूह सफ़ाई कर रहा होगा, कौन पानी भर रहा होगा, कौन पौधों को पानी दे रहा होगा, आदि।

5. रोक–टोक मुक्त वातावरण

बच्चों पर किसी भी तरह की रोक-टोक नहीं लगाई जाती। उन्हें अगर पानी पीने जाना है या टॉयलेट जाना है, वे ख़ुद उठकर चले जाते हैं और वापस आ जाते हैं। इसी तरह, किसी बच्चे को अपनी बात कहनी है, बिना रोक-टोक कार्यालय में आकर अपनी बात कह सकता है। कार्यालय से किसी सामान के इस्तेमाल को लेकर भी कोई पाबन्दी नहीं है। नियम यही है, सामान जहाँ से उठाया गया है उसे वहीं व्यवस्थित जमा दिया जाए।

6. समस्या–समाधान की व्यवस्था

बहुत बार बच्चों की पिटाई इसीलिए करते हैं क्योंकि वे आपस में लड़ते हैं। उस समय जिस बच्चे ने दूसरे बच्चे को पीटा होता है, या फिर जो कम पिटा हुआ लगता है, हम उसे सज़ा दे देते हैं। इससे बच्चों के बीच नाराज़गी बढ़ जाती है। वे सोचते हैं कि मुझे उसकी वजह से सज़ा दी गई है। अगर बच्चों की लड़ाई में से सज़ा को बाहर निकाल दिया जाए तब बच्चे बहुत जल्दी लड़ाई भुला देते हैं, और एक साथ खेलने या काम करने लग जाते हैं। इसीलिए जब हम दो बच्चों को लड़ते देखते हैं तब दोनों को पहले एक साथ बुलाकर बात करते हैं, फिर एक-एक करके अलग से बातचीत की जाती है। उस समय बच्चे की सबसे बड़ी ज़रूरत उसे सुना जाना होती है न कि दूसरे को दण्डित करवाना।

7. सवाल करने की आज़ादी

कक्षा में सभी बच्चों को सवाल करने की आज़ादी है। बच्चे पाठ से सम्बन्धित और अन्य सभी तरह के सवाल कर सकते हैं। हम इस बात की कोशिश करते हैं कि बच्चों को सवालों के सन्तोषजनक जवाब मिलें ताकि उनकी जिज्ञासा शान्त हो सके। बच्चे किसी जिज्ञासा के चलते ही सवाल पूछते हैं। इसका दूसरा पहलू यह भी है कि जब हम बच्चों को सवाल करने की स्वतंत्रता देते हैं, वहीं हमारी भी जवाबदेही तय हो जाती है। फिर बच्चा अगर हमसे कोई निजी सवाल भी कर बैठे तो उसे डाँटकर चुप नहीं करा सकते। मिसाल के तौर पर, अगर मुझे विद्यालय में आने में कभी देरी हो जाती है और बच्चे पूछते हैं कि सर, आज आप लेट कैसे हो गए। यहाँ मेरी ज़िम्मेदारी बनती है कि बच्चों को पूरी सच्चाई के साथ जवाब दूँ। सवाल करने की इस प्रक्रिया में शिक्षक और विद्यार्थी, दोनों की एक दूसरे के प्रति बराबर की जवाबदेही रहती है।

मेरी समझ

- भय और पिटाई से बच्चे सीखते नहीं, बल्कि उनकी सीखने की गति और धीमी हो जाती है। और कुछ परिस्थितियों में भय के कारण सीखना-समझना हमेशा के लिए अवरुद्ध हो जाता है।
- भय की वजह से बच्चे धीरे-धीरे अपना आत्मविश्वास खोते चले जाते हैं, और कोई भी नया काम शुरू करने या सीखने में उनकी झिझक हमेशा बनी रहती है।
- डर दिखाने के अलावा भी बहुत सारे तरीक़े हो सकते हैं जिनके ज़रिए बच्चों को व्यवस्थित कर रचनात्मक कार्यों में संलग्न किया जा सकता है।
- अगर कक्षा में हर कार्य को करने की एक प्रणाली एवं समय तय किया जाता है तब बच्चों को अपना दिन और समय व्यवस्थित करने में मदद मिलती है।
- बचपन का डर जीवनपर्यन्त साथ बना रहता है। अवचेतन स्तर पर उसकी उपस्थिति में बच्चों के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास बाधित हो जाता है।

किशन लाल सालवी राजकीय प्राथमिक विद्यालय, गाडरियावास, बामनियाँ कलाँ, ज़िला राजसमन्द, राजस्थान में विगत 17 वर्षों से शिक्षक हैं। उनकी विद्यार्थियों को अँग्रेज़ी और पर्यावरण अध्ययन विषय पढ़ाने में विशेष रुचि है। साहित्यिक रचनाएँ, विशेष रूप से कहानियाँ पढ़ना उन्हें बहुत पसन्द है।

सम्पर्क : kishankunj2@gmail.com